IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्राचीन भारत के प्रमुख व्यापारिक मार्ग

(IInd C.B.C to IIIrd C.A.D.)

अंजनी कुमार सिंह

(शोध छात्र)

डॉ॰ बीरेन्द्र मणि त्रिपाठी

(एसोसिएट प्रोफेसर)

ने.ग्रा.भा. मानित वि.वि. प्रयागराज

द्वितीय शताब्दी ई0पू0 में व्यापार की प्रगति में व्यापारिक पथो का बहुत अधिक महत्व था। इस युग में एक ओर तो उत्तर भारत के सभी प्रमुख व्यापारिक नगर विभिन्न मार्गों द्वारा एक दूसरे से जुड़े हुए थे तथा दूसरी ओर उत्तर–भारत को कई स्थल एवं जल मार्ग दक्षिण भारत से जोड़ते थे। पहला प्रमुख मार्ग जो उत्तर भारत को दक्षिण भारत से जोड़ता था प्रतिष्ठान से श्रावस्ती आता था। यह राजमार्ग माहिष्मती, उज्जयिनी, गोनद्ध, विदिशा, कौशाम्बी और साकेत में होकर गुजरता था, कुसीनारा, मन्दिर, पावा, वैशाली पाटलिपुत्र भी इस सड़क से जुड़े हुए थे। इस राजमार्ग के सबसे प्रमुख सहायक मार्ग वे थे जो दक्षिण पश्चिम भारत के नगरों जैसे उज्जयिनी, प्रतिष्ठान और नगर को मृगुकच्छ से जोड़ते थे। पेरिप्लस के अनुसार उज्जयिनी से बड़ी माना में सूती कपड़ा मृगकच्छ से लाया जाता था।[1] वहां से गोमेद और इन्द्रगोप और मलमल आदि वस्त्र भी भृगुकच्छ जाये जाते थे।[2] प्रतिष्ठान से गाड़ियों में भरकर बड़ी मात्रा में इन्द्रगोप और तगर से अनेक प्रकार के वस्त्र भृगुकच्छ लाये जाते थे।[3] भृगकच्छ से ये वस्तुएं पश्चिमी देशों को भेजी जाती थी।

दूसरा प्रमुख राजमार्ग जो दक्षिण पश्चिम को दक्षिण पूर्व से जोड़ता था, भृगुकच्छ से कौशाम्बी होकर ताम्रलिप्ति पहुँचता था। सम्भवतः वाराणसी से उज्जयिनी जाने वाले व्यापारी इसी मार्ग से जाते रहे होंगे।[4] चम्पा, पाटलिपुत्र और वाराणसी जाने वाले अनेक व्यापारी गंगा में नावों से यात्रा करते थे।[5] इन स्थल और जल मार्गों के द्वारा वेग, पुंडू और काशी की मलमल उज्जयिनी पहुँचती थी और भृगुकच्छ के बन्दरगाह से विदेशों को भेजी जाती थी।

तीसरा प्रमुख राजमार्ग पूर्वी भारत को पश्चिमी भारत से जोड़ता था यह पाटलिपुत्र से सिन्ध के मुहाने पर पत्तल पहुँचता था। सिन्ध नदी के डेल्टे से यह मार्ग ईरान होकर पश्चिमी देशों को जाता था। इस मार्ग के द्वारा सिन्ध और ईरान से घोडे गंगा के मैदान के नगरों को लाए जाते थे।

चौथा मार्ग चम्पा से पुष्कलावती पहुँचता था इसका उल्लेख मेगस्थनीज ने भी अपने वर्णन में किया है।[6] यह मार्ग पाचाल के प्रसिद्ध नगर काम्पिल्य[7] और मद्र के प्रसिद्ध नगर शाकल[8] होकर तक्षशिला पहुँचता था और वहाँ से पुष्कलावती, पूर्व में यह मिथिला से चम्पा[9] पहुँचता था। उत्तर पश्चिमी भारत से आने वाले घोड़ों के व्यापारी इसी मार्ग से वाराणसी पहुँचते थे। इस राज मार्ग के सहायक मार्गों द्वारा हिमालय पर्वत के प्रदेश में मिलने वाली वस्तुएं जैसे खाल, ऊन, मसाले और बहुमूल्य मणियां इस मार्ग से लाकर दूर के प्रदेशों को भेजी जाती थी।

पाँचवा प्रमुख मार्ग भृगुकच्छ से पुष्कलावती[10] जाता था। पेरिप्लस ने लिखा है कि कश्मीर और हिन्दकुश से इस मार्ग द्वारा बालछड़ विदेशों को भेजने के लिए भृगुकच्छ[11] लाई जाती थी उत्तरपूर्व और पश्चिम से आने वाले दोनों प्रमुख राजमार्ग पुष्कलावती में मिलते थे। वहां से पामीर के पठार में होकर यह मार्ग वैक्ट्रिया पहुँचता था।[12] इस प्रकार कच्चा रेशम, रेशम का धागा और रेशमी कपड़े चीन से वैक्ट्रिया लाये जाते थे। वहाँ से ये वस्तुएं भृगुकच्छ लाकर पश्चिमी देशों को ले जायी जाती थीं।[13] प्लिनी के अनुसार वैक्ट्रिया से आक्सस नदी और कैस्पियन सागर में होकर भारतीय वस्तुएं पूर्वी यूरोप पहुंचती थी।

एक चीनी इतिवृत्त से पता चलता है कि भारत और वैक्ट्रिया के बीच व्यापार ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में भी होता था। जब चीन का रेशम का व्यापार बढ़ा तो तारिम नदी की घाटी पर चीन का राजनीतिक और सैनिक प्रभाव बढ़ गया। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी के उत्तरार्ध से चीन के रेशम के व्यापार का उसने बाद की कई शताब्दियों तक आक्सस की घाटी उत्तर पश्चिमी भारत और पश्चिमी ऐशिया के राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ा। चीन के सम्राट बूती (ई0पू0 140–86) ने फरगना, वैक्ट्रिया के शासकों के साथ राजनयिक सम्बन्ध स्थापित किया[14] वैक्ट्रिया के मार्ग में व्यापारियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। मार्ग में अनेक कबीले रहते थे, जो व्यापारियों को लूट लिया करते थे। जब ईसा की पहली शताब्दी में पार्थिया युद्ध में फँस गया तो स्थल द्वारा व्यापार बहुत कम हो गया। अधिकतर व्यापारी भृगुकच्छ से होकर समुद्र द्वारा पश्चिमी देशों को जाने लगे। चीन का मार्ग भी जब तक चीन ने तुकिस्तान पर अधिकार न किया असुरक्षित रहा। पेरिप्लस से पता चलता है कि कच्चा रेशम, रेशम के धागे और रेशमी कपड़ा स्थल मार्ग द्वारा चीन से बैक्ट्रिया और वहाँ से भड़ोच और गंगा नदी के द्वारा कोरोमण्डल तट पर ले जाया जाता था।[15] परन्तु जब कनिष्क का साम्राज्य भारत से मध्य ऐशिया और चीन की सीमा तक फैल गया तो भारत के मेसोपोटामिया और चीन के साथ व्यापार में बहुत वृद्धि हो गयी। इससे कुषाण साम्राज्य समृद्ध हुआ।

इस प्रकार विवेच्य काल में एक ओर तो उत्तर भारत के सभी प्रमुख व्यापारिक नगर मार्गों द्वारा एक दूसरे से जुड़े थे तो वही दूसरी ओर उत्तर भारत के कई स्थल एवं जल मार्ग दक्षिण भारत से जुड़ते थे। पतंजलि ने स्त्रुघ्न (सुध) और पाटलिपुत्र जाने वाले पथों के अतिरिक्त प्रसिद्ध उत्तरापथ का भी उल्लेख किया है जो

पुष्कलावती से तक्षशिला तक जाता था और इसके आगे सिन्धु, झेलम, व्यास, सतलज, एवं यमुना नदियों को पार करता हुआ तथा हस्तिनापुर, कन्नौज और प्रयाग आदि नगरों से गुजरता हुआ पाटलिपुत्र पहुँचता था। पाणनि का अनुशरण करते हुए पंतजलि ने संकरे, चौड़े और जंगली एवं जलीय पथों का उल्लेख किया है।[16] पथों की सुख सुविधा एवं सुरक्षा पर राजाओं द्वारा ध्यान दिये जाने के बावजूद अनेक मार्ग उबड़–खाबड़ तथा असुरक्षित थे। महावस्तु से पता चलता है कि मार्गों में व्यापारियों तथा अन्य यात्रियों को हिंसक पशुओं एवं लुटेरों, डाकुओं के आक्रमणों का सामना करना पड़ता था।[17] कुछ रास्ते में गाड़ियों के पहिए जमीन में धंस जाते थे और कभी–कभी गाड़ियां टूट जाती थी।[18] द्वितीय शताब्दी ईसापूर्व से द्वितीय शती ई0 के बीच स्थल मार्गों से होने वाले व्यापार की अपेक्षा जलीय मार्गों द्वारा किया जाने वाला व्यापार अधिक लाभ प्रद एवं उन्नति पर था।

संदर्भ

1. पेरिप्लस 47
2. वही0 48
3. वही0 51.
4. जातक 2, 48
5. वही0 1, 112, 4, 5, 17, 159, 6, 12, 35
6. स्ट्रैवो 15, 1, 11
7. जातक 6, 4, 19, 463
8. मिलिन्दपन्हों 16 के आगे उद्धृत – ओम प्रकाश– 'प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास
9. जातक, 6, 32
10. पेरिप्लस 47. उद्धत ओम प्रकाश 'प्राचीन भारत का आर्थिक इतिहास' पृ0–103
11. वही0 48.
12. प्लिनी 6, 17
13. आढ़या जी0एल0 उपर्युक्त पृ0 159.
14. आढ़या जी0एल0 उपर्युक्त पृ0 159
15. पेरिप्लस –64
16. अग्निहोत्री– 'पतंजलि कालीन भारत' पृ0–335–37
17. महावस्तु 3/303/1–2
18. ललित विस्तार 493/18/19–21 शतक, 1/17/6–7.